नागार्जुन के उपन्यासों में स्त्री-चेतना के सन्दर्भ

(डॉ. सरिता)

विगत दशकों में स्त्री-विमर्श साहित्य और समाज के चिंतन की धूरी बना हुआ है। इसके द्वारा सत्री-चेतना के प्रयासों को एक बौद्धिक आधार मिला है। किसी भी देश की आधी आबादी का प्रतिनिधित्व स्त्रियां करती हैं। इसलिए सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक किसी भी स्तर पर उनकी उपेक्षा वस्तुतः समाज को उसकी आधी ताकत से वंचित कर देता है। प्रकत नह और नारी समान हैं: उनमें श्रेष्ठा और हीनता का कोई प्रश्न नहीं है। किन्तु पुरूष प्रधान समाज में | का शोषण प्रारम्भ से होता रहा है, शुरू से ही वे अपने अधिकारों से वंचित रही हैं। हमारे समाज का ढाँचा ही इस प्रकार का रहा है, क्योंकि एक स्त्री पैदा नहीं होती बना दी जाती है। (सीमन द बोउसार)। विकास की समस्त सुविधाओं से महरूम कर उस पर असहाय, कमजोर, दुर्बल अबला होने का 'लेबल' लगा दिया जाता है। ग्रामीण जीवन के कथाकार नागार्जुन ने स्त्री मुक्ति के प्रश्नों को प्रतिबद्ध ढंग से अपने साहित्य में उठाया है। युगीन समाज का चित्रण करने के साथ उन्होंने नारी को पुरूष के ही समान सृष्टि का और समाज का एक अविमाज्य अंग मानकर उसे आत्मीयता प्रदान करने की चेष्टा की है। वे नारी को पूर्ण शक्ति से सम्पन्न देखना चाहते हैं। नारी के उत्थान और उसमें आयी नवीन चेतना के उदघोष उनके उपन्यासों में मिलता है। “उग्रतारा' उपन्यास की उगनी हो या “नयी पौध' की बिसेसरी 'वरूण के बेटे” की माधुरी हो या कुंभीपाक की चंपा व भुवन- सभी समाज के अत्याचारों के विरूद्ध लड़ने वाली नारियाँ हैं। ये अत्याचार के खिलाफ लड़कर अपना जीवन नये सिरे से बसाती हैं। दलित शोषित, उत्पीड़ित स्त्रियों से, उनकी समस्याओं से लड़ने की बात करते हैं। नशाखोर ससूर के अत्याचारों से तंग होकर माधुरी पिता के घर भाग जाती है। उसका अपने पति को तलाक देना, दूसरा विवाह करने अथवा एकाकी रहने का विचार व्यक्त करना परम्परागत विवाह सामाजिक मान्यताओं के खिलाफ विद्रोह ही है। वह निश्चय करती है, पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री एक स्वतंत्रचेता व्यक्तित्व न होकर 'अन्या' है। उसे चुनने का अधिकार नहीं है। चनने का अधिकार नहीं यानि प्रेम का अधिकार नहीं। उसके लिए प्रेम सामाजिक संस्था 'विवाह' के दायरे में ही संभव है। वहाँ भी उसकी मर्जी नहीं चलती। किंतु नागार्जुन स्त्री स्वतन्त्रता के हिमायती हैं। अभिनंदन उपन्यास में लल्लन जी के माध्यम से उन्होंने अपने विचार व्यक्त किए हैं परन्तु मान सम्मान के लिए की जाने वाली हत्या जैसे जगन्य अपराध आज भी इस सभ्य समाज में देखे जा सकते हैं। विधवा उगनी और विधुर कामेश्वर का प्रेम तत्कालीन भारतीय समाज में निश्चित ही एक क्रांतिकारी घटना मानी जायेगी। उगनी एक बाल विधवा थी। कामेश्वर एक विधुर था। दोनों एक दूसरे से प्रेम करते थे। सनातन रूढ़िग्रस्त समाज उनके प्रेम का अन्त कर देना चाहता था। परंतु कामेश्वर ने डटकर उसका विरोध किया। गाँव के लोगों ने ठगनी पर अत्याचार किए। दोनों घर से भाग जाते हैं। परंतु दोनों को बाद में जेल में जाना पड़ा। उगनी सिपाही मीखन सिंह के शोषण का शिकार होती है और उससे गर्भवती होती है। पर नरकतुल्य जीवन से कामेश्वर उसे युक्त देता है-पराये पुरूष से गर्भ धारण करने वाली अपनी प्रेयसी को स्वीकार करना निश्चित ही एक क्रांतिकारी बात है। समाज की चिंता न कर कामेश्वर उगनी और उसके गर्म को स्वीकार करता है। नागार्जुन नारी समानता के पूर्ण समर्थक हैं। आजादी के बाद भारत में सामाजिक स्तर पर अनेक परिवर्तन हुए। नारी अब तक सीमित न रहकर नौकरी तथा अन्य क्षेत्र में बाहर आ गई। 'नई पौध में बसेसरी के बारे में विश्वास देते समय दिगंबर वाचस्पति से कहता है-'बिसेसरी बड़ी समझदार और बहादुर लड़की है। बोझा बनकर तुम्हारी गर्दन नहीं तोड़ेगी वह। साथ रखोगे और माकूल ट्रेनिंग दोगे अच्छी से अच्छी साथिन बनेगी

नागार्जुन एक ऐसे समाज की कल्पना करते हैं जिसमें नर नारी मिलकर प्रगति के रास्ते खोजें।

जहाँ कोई किसी की लाचारी का फायदा न उठाता हो, किसी भी प्रकार का शोषण न करता हो। भुवन को चंपा द्वारा कहे गये ये शब्द काफी महत्यपूर्ण हैं- नारी का सर्वागीण विकास शिक्षा और ज्ञान के माध्यम से ही हो सकता है। अतः शिक्षा स्त्रियों का अधिकार होना चाहिए। तभी अपने शोषण की प्रकिया और अत्याचारियों की पहचान कर सकेगी, अपने अधिकारों के प्रति सचेत रह पायेगी, उनके लिए लड़ पायेगी। नागार्जुन शिक्षा को ही समाज को आगे बढ़ने का साधन मानते हैं। नारी शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते हुए नागार्जुन ने नायक बलचनमा के माध्यम से कहलवा दिया है- स्त्री चेतना के ये संदर्भ नागार्जुन के उपन्यासों में दृढ़ता के साथ अभिव्यक्त हुए हैं। इनके नारी पात्र आर्थिक स्वावलंबन के लिए छटपटाते हैं। श्रम पर विश्वास होने के कारण उनमें एक अदम्य साहस और विश्वास है। 'कुंमीपाक' उपन्यास की महतरनी चंपा झाड़ू दिखलाकर ठसक भरी आवाज देती है- पती के बिमार होने पर मेहतरनी हार नहीं मानती और स्वयं मेहनत कर अपने परिवार का पेट पालती है। 'रतिनाथ की चाची' की विधवा गौरी भी चरखा चलाकर सूत कातती है और अपना जीवनयापन करती है।

नागार्जुन के नारी पात्र राजनीतिक क्षेत्र में भी पीछे नहीं हैं। यहाँ तक कि अशिक्षित पात्र भी राजनीतिक चेतना में सजग हैं। गौरी अनपढ़ होकर भी रूस की समाजवादी विचारधारा से प्रभावित है। ताराचरण का विश्वास था कि अंत में रूस हार जायेगा, लेकिन चाची दढ़ता से कहती है- नागार्जुन के कथा साहित्य में स्त्री-संचेतना अनेक स्तरों पर उभर कर आयी है। सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक क्षेत्र में उनकी जागरूकता लेखक की प्रखर जनवादी दृष्टि का परिचायक है, जो स्त्री मुक्त के जनोन्मुखी समाघान तलाशती है। नागार्जुन की प्रतिबद्ध स्त्री दृष्टि, स्त्री सशक्तिकरण की दिशा में एक सार्थक तर्कपूर्ण कदम है।